



हिन्दी पत्रकारिता और भारतीय राष्ट्रवाद का संक्षिप्त विश्लेषण

- Dr. Digvijay Kumar Sharma, Assistant Professor, Department of Hindi, Central Hindi Institute Agra
- Basant Kumar, Research Scholar, Calorx Teachers' University, Ahmedabad, Gujrat

सार—

पत्र-पत्रिकाओं की दृष्टि से आज हिन्दी भाषा समृद्ध मानी जाती है। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने अपने 150 वर्ष के जीवन में काफी प्रगति की है। आजकल भारत में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ ही संख्या में सबसे अधिक प्रकाशित होती हैं। हिन्दी-भाषी क्षेत्रों में भी अन 'क' पत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित होती रहती हैं। आज तो पत्रों की इतनी भरमार है कि लगभग प्रत्येक बड़े शहर में प्रति मास दो-चार पत्रों का प्रकाशन आरम्भ होता है और दो-चार किसी अभाव के कारण बन्द हो जाते हैं। यह सभी जानते हैं कि पत्र-पत्रिकाएँ हमारे सामाजिक जीवन को कितना प्रभावित करती हैं। हम देश-विदेश की प्रत्येक हलचल का नवीनतम लेखा-जोखा उन्हीं के द्वारा प्राप्त करते हैं। 19वीं सदी में भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना के विकास का प्रारंभ हुआ। राष्ट्रवाद के उदय में हिन्दी पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। पत्रकारिता जनसंचार का सशक्त माध्यम है, जो समाज को जागृत करके उसमें उत्साह एवं चेतना का निर्माण करते हैं। इससे मनुष्य जीवन की विविधताएँ तथा रोज घटने वाली घटनाओं से परिचित होते हैं। पत्रकारिता की शक्ति से समाज की कमियों, गलतियों और कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। पत्रकारिता लोगों को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक गतिविधियों का परिचय देकर उसमें जागृति लाते हैं। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान लोगों को जागरूक करने में पत्रकारिता का योगदान महत्वपूर्ण रहा। प्रेस तथा पत्रकारिता के द्वारा राष्ट्रवाद को नया आयाम मिला।

प्रस्तावना—

स्वतंत्रता कालीन भारतीय पत्रकारिता ने राष्ट्र के सामाजिक, राजनीतिक जीवन धारा को गहराई से प्रभावित कर बौद्धिक चेतना पैदा करने में प्रभावी भूमिका अदा की क्योंकि उसने जनता से सीधे उसी के भाषा और उसी के मुहावरे में संवाद स्थापित किया। 19वीं सदी में राष्ट्र की आशाओं और आकांक्षाओं को वाणी देने वाले पत्र और पत्रकार ने जन-जन को राजनीति की दिशा दिखाई और संस्कृति के गौरव का स्मरण कराया, जिसके कारण उनमें राष्ट्रीय नवजागरण हुआ।

भारत में मुद्रण कला यानि प्रेस की स्थापना पुर्तगालियों द्वारा किया गया। डॉ० अवधेश कुमार का कहना है कि "भारत में सन् 1556 में पुर्तगालियों के माध्यम से प्रेस का प्रयोग आरंभ किया गया जिसे सर्वप्रथम गोवामें स्थापित किया गया। सन् 1557 में भारत में सर्वप्रथम 'ट्राक त्रिनिक्रिटामो' नामक पुस्तक प्रकाशित की गई।", लेकिन भारत में पत्रकारिता विकसित करने का श्रेय अंग्रेजों को जाता है। अंग्रेजों ने बंबई (1672), मद्रास (1772) और कलकत्ता (1779) में प्रेस की शुरुआत की। पत्रकारिता के क्षेत्र में सर्वप्रथम जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 29 जनवरी, 1780 ई० में 'हिक्कीजगजट' अथवा 'बंगालगजट' प्रकाशित किया जो 'कलकत्ता जर्नल एडवर्टाइजर' के नाम से भी जाना जाता है।



यह अंग्रेजीभाषामें एक साप्ताहिकपत्र था।ओ.पी. शर्माभारतीय पत्रकारिता के विकास के इतिहासपरलिखतेहैंकि “18वीं शती के अंतिमचरणमें इस देश के तीनप्रांतअर्थात्बंगाल, मद्रासऔरबंबईमेंअंग्रेजीभाषामेंसाप्ताहिकऔरमासिकपत्र निकलनेलगेथे।अबतकदैनिकों का युगनहींआयाथाऔर न भारतीय भाषाओंमेंकोईपत्र प्रकाशितहोताथा।”²,

1818 ई0 मेंबंगलाभाषामेंभारतीय भाषा का प्रथमनियतकालीनपत्र ‘दिग्दर्शन’ जे0सी0 मार्शमैन के नेतृत्वमेंप्रकाशितहुआ। यह मासिकसमाचारपत्र था।बंगलाऔरअंग्रेजी के अतिरिक्तइसकेहिन्दी के भीतीनअंकप्रकाशितहुए थे।आगेचलकर यह ‘समाचारदर्पण’ नाम से बंगलाऔरअंग्रेजीभाषामेंसप्ताहमेंदोबारछपनेलगा।इसी समय भारतीय समाजसुधारकों ने पत्रकारिता के क्षेत्र मेंअपना योगदाननिभाया।राजाराममोहनराय ने 1816 ई0 में ‘बंगालगजट’ 1821 ई0 में ‘संवादकौमुदी’, 1825 ई0 मेंमिरातउल अखबारप्रकाशितकिए। ‘बंगालगजट’ भारत का प्रथमसमाचारपत्र था, जिसकेसंपादकगंगाधरभट्टाचार्यथे। ‘बंगालगजट’ अंग्रेजीभाषा का समाचारपत्र था।

हिन्दीपत्रकारिता का प्रारंभ 30 मई 1826 कोकलकत्ता से प्रकाशित ‘उदन्तमार्तण्ड’ के साथहुआ। ‘उदन्तमार्तण्ड’ के संपादकपंडितजुगलकिशोर शुक्लथे। यह साप्ताहिकपत्र था। यद्यपि कुछविद्वानों ने 1818 ई0 मेंप्रकाशित ‘दिग्दर्शन’ पत्रिका कोहिन्दी का समाचारपत्र मानाहै।किन्तु डॉ0 लक्ष्मीशंकरव्यास ने इसका खंडनकरतेहुए लिखा है— “दिग्दर्शननामकमासिक पत्रिका कोहिन्दी का प्रथमसमाचारपत्र कहनाइसलिए नहींकहाजासकता, क्योंकि यह स्वतंत्र रूप से हिन्दीभाषामेंनहींनिकालागया।अप्रैल 1818 ई0 मेंबंगला ‘दिग्दर्शन’ पत्रिका काउल्लेख मिलताहै।बादमें 1819 मेंइसकाअंग्रेजीसंस्करणप्रकाशितहोने की सूचनामिलतीहै।इसकेबाद ‘दिग्दर्शन’ का हिन्दीसंस्करणतैयारहुआ।

इसकेअंकभीअभीअप्राप्तहै।इसकाउल्लेख अभीरिपोर्टमेंहै।”³

अतः ‘उदन्तमार्तण्ड’ कोहिन्दी का पहलासमाचारपत्र मानाजाताहै।लगभगडेढ़ वर्षनिकलने के पश्चात् सरकारीदिककतोंऔरआर्थिककठिनाईयों के कारण ‘उदन्तमार्तण्ड’ बंद होगया।

राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिकतथा धार्मिकविकास के परिणामस्वरूपजोराष्ट्रवादउदितहुआ, उसेपत्रकार, बुद्धिजीवी, राष्ट्रवादीलोगविभिन्नपत्र-पत्रिकाओंमेंअंग्रेजी शासन के दमन औरपोषण के विरुद्ध लिखतेरहेऔरजनताकोजागरूककरकेनवोत्थान के लिए मार्गप्रशस्तकिया।हिन्दीऔरअन्य भारतीय भाषाओं के पत्रकारअपनीराष्ट्रवादीभावनाओंऔरविचारों के लिए प्रख्यातरहेहै। स्वतंत्रतासंघर्ष के दौरानहिन्दीसाहित्य औरहिन्दीपत्रकारितासाथ-साथचलनेलगे।तत्कालीनपरिस्थितिमेंरचनाकार एक साथसाहित्यकारऔरपत्रकारदोनोंहुआकरतेथे।पत्रकारिता के संबंध मेंकहागयाहैकिवह शीघ्रतामेंलिखा गयासाहित्य हैऔरसाहित्य प्रतीक, बिम्बऔरअप्रस्तुतकथन के द्वाराअपनाप्रतिपाद्य अभिव्यक्तकरताहै।साहित्य को समझने वालेलोगों का एक खासवर्गहोताहै, किन्तुपत्रकारिताजनता की भाषामेंजनता की बातकरतीहै।संभवतः यहींकारणहैकि स्वतंत्रताअवधि के सभीरचनाकारों ने अभिव्यक्ति के माध्यम के रूपमेंसाहित्य औरपत्रकारितादोनोंकोचुना।जिसप्रकारदेश के स्वाधीनता-संग्राममेंराष्ट्रनायकों



का अप्रतिम योगदान रहा, उसी प्रकार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को जगाया गया। राष्ट्रीयता की वह धारा जिसका विकास राजनीति के माध्यम से हो रहा था पत्रकारिता की शक्ति से संपन्न थी।

1826 ई० में 'उदंतमार्तण्ड' के प्रकाशन से लेकर 1873 ई० में भारतेन्दु के 'हरिश्चन्द्रमैगजीन' तक को हिन्दी पत्रकारिता का प्रथम चरण कहा जा सकता है। 'हरिश्चन्द्रमैगजीन' एक वर्ष बाद 'हरिश्चन्द्र पत्रिका' नाम से प्रसिद्ध हुआ। वैसे भारतेन्दु का 'कविवचनसुधा' पत्र 1867 ई० में ही प्रकाशित हुआ था; परंतु नई भाषा शैली का प्रवर्तन 1873 ई० में 'हरिश्चन्द्रमैगजीन' से ही हुआ। इस बीच के अधिकांश पत्र प्रयोग मात्र कहे जा सकते हैं। प्रारंभिक काल के हिन्दी पत्र निम्नांकित रहे हैं—जुगलकिशोर शुक्ल का 'उदंतमार्तण्ड' (1826), नीलरतन हालदार का 'बंगदूत' (1829), राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द का 'बनारस अखबार' (1845), प्रेमनारायण का 'मालवा अखबार' (1848), तारामोहन मित्र का 'सुधाकर' (1850), मुंशी सदासुखलाल का 'बुद्धि प्रकाश' (1852), मुंशी लक्ष्मणदास का 'ग्वालियर गजट' (1853), श्यामसुंदर का 'समाचारसुधावर्षण' (1854) राजा लक्ष्मण सिंह का 'प्रजाहितैषी' (1855), बाबू श्रीलाल का 'जियाजीप्रताप' (1855), शिवनारायण का 'सर्वहितकारक' (1855), ग्रंथसभा का 'बुद्धिवर्धकग्रंथ' (1856), कन्हैयालाल का 'राजपूताना अखबार' (1857), अजीमुल्ला का 'पयामेंआजादी' (1857), नवीनचन्द्रराय का 'ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका' (1866), तत्वबोधिनी पत्रिका (1865) आदि। ये पत्र राष्ट्रीयता की भावना से भरी हुई थीं। इन पत्रों में समाजसुधार, राष्ट्रीयता, क्रांति की भावना एवं विदेशी शासन के विरुद्ध बगावत का स्वर है।

1873 से 1900 तक का युग भारतेन्दु का युग था। भारतेन्दु युग का नामकरण हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाम पर किया गया है। इस युग के एक छोटे पर भारतेन्दु का 'हरिश्चन्द्रमैगजीन' था तो दूसरी छोटे पर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदन प्राप्त 'सरस्वती पत्रिका'। इन सताइस वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता के विकास में पर्याप्त तेजी आयी। इन वर्षों में प्रकाशित पत्रों की संख्या 300-350 से ऊपर है। "यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारतेन्दु काल तक हिन्दी पत्रकारिता के साढ़े तीन सौ से अधिक अखबार विकसित हो गए थे, जिनमें से अधिसंख्य लोगों में राष्ट्रीय भावना पैदा करने, देश के लिए मर मिटने तथा स्वाधीनता के लिए तैयारी कर रहे थे।"⁴

अंग्रेजी साहित्य और संस्कृति के संपर्क में आने के कारण भारत में दुःहरिश्चन्द्र के समय भारतीय सांस्कृतिक जीवन और साहित्य में नवीन अध्यायों की निर्मिति हुई। भारतीय साहित्य रूढ़िवादिता, नियमबद्धता और सामंतवादिता के बंधनों को तोड़कर समाज के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन की प्रत्येक गतिविधियों में उन्मुक्तता सँसलेने लगा। इस युग के पत्रकारिता के उद्देश्य बहुआयामी थे। एक ओर राष्ट्रीयता की चेतना के साथ-साथ अंग्रेजी सरकार का पर्दाफाश करना तो दूसरी ओर सामाजिक चेतना को जागृत करना एवं सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों का उन्मूलन करना पत्रकारों के प्रमुख उद्देश्य थे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भारत में दुःहरिश्चन्द्र का अभूतपूर्व देन है। उन्होंने जहाँ एक ओर साहित्य की नवीन विधाओं को विकसित किया, वहीं हिन्दी पत्रकारिता को भी नई दिशा प्रदान की। भारतेन्दु काल में अनेक हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं, जिनसे भारतेन्दु किसी न किसी रूप में अवश्य संबद्ध रहे। इसलिए भारतेन्दु को पत्रकारिता के क्षेत्र में 'नवजागरण का अग्रदूत' कहा जाता है। "हिन्दी पत्रकारिता में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का वस्तुतः वही स्थान है जो बंगाल की



पत्रकारितामें राजाराममोहनराय का।⁵, हिन्दीसाहित्य कोश भाग-2 मेंभारतेन्दु के बारेमेंलिखा है- “भारतेन्दुहरिश्चन्द्रनवयुग के ‘अग्रदूत’ औरहिन्दीसाहित्य मेंआधुनिकता के जन्मदाताथे।उनकीरचनाएँ देशप्रेम से ओतप्रोतहै।” हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, मराठी, बंगाली, अंग्रेजीऔरउर्दूभाषा से परिचितहोकरभारतेन्दु ने अपनेविचारों का पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से सामान्य जनतातकप्रचारकिया। ‘कविवचनसुधा (1867), ‘हरिश्चन्द्रमैगजीन’ (1875) तथा ‘बालबोधिनी’ उनकीप्रसिद्ध पत्रिकाएँ हैं। ‘कविवचनसुधा’ का प्रकाशनहिन्दीपत्रकारिताको एक नयाआयामदिया। ‘बालबोधिनी’ नामक पत्रिका 1874 मेंप्रकाशितहुई।हिन्दीमेंछपनेवालीनारीसमाज की पहलीमासिक पत्रिका थी। “भारतेन्दु ने पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य की अनेकनवीनविधाओंकोविकसितकर उनके माध्यम से स्वतंत्रता की भावनाकोविकसितकिया। उनके पत्रों से राष्ट्रीय विचारधाराप्रस्फुटितहुई।”⁶,

भारतेन्दु के पत्रों के अतिरिक्त पं० बालकृष्ण भट्ट का ‘हिन्दीप्रदीप’, पं० प्रतापनारायण मिश्र का ‘ब्राम्हण’, प्रेमधन का ‘आनंदकादंबिनीऔर ‘नागरीनीरद’, पं० गौरीदत्त का ‘देवनागरीप्रचारक’, ठाकुरहनुमंत सिंह का ‘राजपूत’, रुद्रदत्त शर्मा द्वारासंपादित ‘भारतमित्र’ बालमुकुन्दगुप्त का ‘हिन्दीबंगवासी’, श्रीतोतारामजी का ‘भारतबन्धु’, गोपालरामगहवरी का ‘भारतभूषण’, पंडितमोहनलाल द्वारासंपादित ‘मोहनचंद्रिका’ आदि इस युग के प्रमुख पत्रिकाएँ एवंपत्रकारथे।इनमें से अधिकांशसंपादक एवंलेखकभारतेन्दुमण्डल के थे।इनसभी का मूलउद्देश्य स्वदेशप्रेम, भाषा एवंसंस्कृति के प्रतिअनन्य श्रद्धा, राष्ट्रप्रेम, हिन्दीभाषा का प्रचारआदिथा।

भारतेन्दुकालीनपत्र-पत्रिकाओंमेंसाहित्य कोसमुचितस्थानप्रदानकरने के साथ-साथराष्ट्रीयताऔरसमाजसुधारजैसीभावनाओंकोमहत्वदियागया। इस कालमेंपत्रों के संपादक या संस्थापकसभीसाहित्यकारथे, जिनकाउद्देश्य साहित्य सेवातोथाही, वहींदेश की समस्याओंकोउजागरकरनाभीउनका लक्ष्य था। इस युग की पत्रकारितामेंक्रांति, परिवर्तनऔरसुधार का स्वरसुनाईपड़ताहै।

1900 ई० से 1920 ई० तक का युग द्विवेदी युग के नाम से जानाजाताहै।बीसवीं शताब्दी के पहलेदोदशक के पथ-प्रदर्शक, विचारकऔरसाहित्य नेताआचार्यमहावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम परही इस काल का नाम ‘द्विवेदी युग’ पड़ा। 1900 मेंप्रकाशित ‘सरस्वती’ के माध्यम से पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने साहित्यिकपत्रकारिता की परंपराको समृद्ध औरपरिष्कृतकिया। ‘सरस्वती’ पत्रिका मेंदेशप्रेमविषयककविता का प्रकाशनअनवरतजारीरहा। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की ‘जन्मभूमि; भारतभूमि’ ‘आर्यभूमि’ ‘प्यारावतन’, गोपाल शरण सिंह की ‘मातृभूमि’ रूपनारायण पांडेय की ‘मातृभूमि, लक्ष्मण सिंह की ‘जन्मभूमिपूजन’, रामनरेश त्रिपाठी की ‘जन्मभूमिभारत’, रामचरितउपाध्याय की ‘भव्यभारत’ आदिदेश-प्रेम से ओत-प्रोतकविताएँ ‘सरस्वती’ मेंलगातारप्रकाशितहोतीरही।महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सन् 1903 से 1918 ई० तकलगातार ‘सरस्वती’ का संपादनकरहिन्दी की साहित्यिकपत्रकारिताकोनयाआयामदिया। यहीकारणहैकिपत्रकारिता के इस कालावधि कोसाहित्यिकपत्रकारिता का युगअथवा द्विवेदी युगकहाजाताहै।आचार्यनंददुलारेबाजपेयीलिखतेहै- “द्विवेदीजी के सरस्वतीसंपादन का इतिहास ऐसेअनेकआंदोलनों का इतिहासहैजो उनके व्यक्तित्वऔरतत्कालीनसमाज के विकास का इतिहासभीकहाजासकताहै।”⁷

इस युग की पत्रकारिताको न केवल द्विवेदीबल्कि लोकमान्य तिलकऔरमहात्मागांधी ने भीप्रभावितकिया। द्विवेदीकालीनप्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ निम्नांकितहै- पं० चंद्रधर



शर्मागुलेरी के संपादकत्वमेंजयपुर से 'समालोचक' पत्रिका, शांतिनारायाण का 'स्वराज्य' पत्र, मदनमोहनमालवीय का 'अभ्युदय' तिलक के केसरी का हिन्दीसंस्करण 'हिन्दीकेसरी', पं० सुंदरलाल का 'कर्मयोगी', कृष्णकांतमालवीय का 'मर्यादा', गणेश शंकरविद्यार्थी का 'प्रताप', युवकऔर 'विशालभारत', 'युगांतर', 'गदर', वंदेमातरम्, प्रभाआदि। इनपत्र-पत्रिकाओं ने स्वतंत्रताआंदोलनमेंअपनाभरपूर योगदानदिया।

1920 ई० के बादपत्रकारितापरगांधी के विचारों का स्पष्टप्रभावदिखाईपड़ताहै। अबपत्रकारिता की धाराराष्ट्रीय चेतना से प्रेरितहोकरमहात्मागांधी के नेतृत्वमेंगतिमानराष्ट्रीय आंदोलन का समर्थनकरनेलगी। इस युगमेंगांधीजी ने अपनीपत्रकारिता के माध्यम से जन-जागरण, सत्याग्रह एवंअछूतोद्वार का कार्यप्रारंभकरदिया। 'नवजीवन' और 'हरिजन' पत्र के माध्यम से गांधीजी ने तो एक नए युगऔरसामाजिकक्रांति का उद्घोषकरदियाथा।

गांधीजी से प्रभावितहोकरस्वराज की माँगकोमुखरस्वरदेनेहेतुविभिन्नपत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशितहुयी। जैसे-जबलपुर से 'कर्मवीर', आगरा से 'सुधाकर', लाहौर से 'ज्योति', सोहागपुर से हिन्दू प्रयाग से 'हिन्दुस्तानी अखबार', कलकत्ता से 'क्षत्रिय मार्तण्ड', काशी से 'अहिंसा', 'आज', कानपुर से 'वर्तमान' और 'लोकमत', पटना से 'प्रजाबंधु' तथा 'देश' आदिपत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशितहुयी।

गांधीयुगीन पत्रिका लोगोंमेंराष्ट्रीय चेतनाजागृतकररहेथे। तत्कालीनपत्रकार के लिए देशभक्तिऔरसाहित्य सेवा उनके जीवन की साधनाथी। गांधी के आदर्शोंतथासिद्धांतों से प्रेरितहोकरअनेकपत्र-पत्रिकाएँ छपनेलगी, जिनमेंकुछप्रमुख हैं- 'माधुरी', 'समन्वय', 'चांद', 'अर्जुन', 'मतवाला', 'सैनिक', 'कल्याण', 'सुधा', 'विशालभारत', 'विश्वभारती', 'साहित्य संदेश', 'रूपाय', 'नवभारतटाइम्स', 'प्रतीक', 'हंस', 'सरिता', 'नईदुनिया' आदि का प्रकाशनहुआ।

इनसभीपत्रों के अतिरिक्त इस कालमेंअनेकपत्रों का प्रकाशनहुआ। इस काल की सभीपत्र-पत्रिकाएँ, चाहे वो साहित्यिकहो, धार्मिकहो या राजनीतिकहो, सभी ने स्वतंत्रतासंग्राममेंअपनाअमूल्य योगदानदिया। 1921 के बादगांधीजी के नेतृत्वमेंराष्ट्रीय आंदोलन मध्यवर्गतकसीमित न रहकरग्रामीणोंऔरश्रमिकोंतकपहुँचगयाऔर इस प्रसारमेंहिन्दीपत्रकारिता की महत्वपूर्णभूमिका रही।^१

निष्कर्ष:

भारतीय राष्ट्रवादकोजीवितरखनेऔरविकसितकरनेमेंहिन्दीपत्रकारिता का बहुतबड़ा योगदानहै। प्रारंभ से हीहिन्दीपत्रकारिताअपनेऊँचेआदर्शों का पालनकरतीआरहीहै। सदा से हीराष्ट्रीयताउसका मुख्य स्वररहाहै। राष्ट्रीय सम्मानऔरमर्यादा की रक्षा के लिए पत्रकारों ने अनेककष्टऔर यातनाएँ सही, किंतुवेअपनेकर्तव्य से विचलितनहींहुए। स्वतंत्रतापूर्व की हिन्दीपत्रकारिताराष्ट्रीय आंदोलनकोगति, शक्तिऔरदिशाप्रदानकी।

संदर्भग्रंथसूची:

1. डॉ० अवधेशकुमार, हिन्दी की साहित्य पत्रकारिता, पृ०-33
2. ओ०पी० शर्मा, पत्रकारिताऔरउसकेविभिन्नस्वरूप, पृ०- 14
3. डॉ० रत्नाकरपांडेय (संपादक), हिन्दीपत्रकारिता, पृ०- 104, 105
4. अनिलसिन्हा, हिन्दीपत्रकारिता, इतिहासस्वरूपऔरसम्भावनाएं, पृ०- 18



5. अनिलसिन्हा, हिन्दीपत्रकारिता, इतिहासस्वरूपऔरसम्भावनाएँ, पृ0– 34
6. हिमांशु शेखर सिंह, हिन्दीपत्रकारिताऔरकाशी, पृ0– 69
7. ओ0पी0 शर्मा, पत्रकारिताऔरउसकेविभिन्नस्वरूप, पृ0– 25
8. रूपमकुमारी, हिन्दीपत्रकारिताऔरराष्ट्रवाद, इन्टरनेशनलजर्नलऑफहिन्दी, पृ0 35